गोलालारीय समाज का मुखपत्र

golalariya.darshan@gmail.com
गोलालारीय दर्शन यहां भी देख सकते है -
www.golalariya.com

RNI No. MPHIN/2008/26873
No. MP/ICD/1252/2015-2017

मासिक
गोलालारीय दर्शन

लेट पोस्टिंग

अपनों के साथ अपनी बातें

सेवा में,

क्षमावाणी विशेषांक

जो भरा नहीं है भावों से, बहती जिसमें रसधार नहीं । हृदय नहीं वह पत्थर है, जिसको समाज से प्यार नहीं ।

वर्ष : 8 अंक : 12 पृष्ठ संख्या : 8 माह - 15 अक्टूबर 2017 सहयोग राशी 1100/- देकर सदस्य बनें ।

नमोस्तु शासन जयवंत हो

10 साल बाद इन्दौर में एक बार फिर जैनेश्वरी दीक्षा का साक्षी बना । जब आठ दीक्षार्थियों ने शुक्रवार को आचार्य श्री 108 विशुद्ध सागरजी महाराज के सानिध्य में मुनि दीक्षा ली । आठों को दीक्षा देने से पहले आचार्य श्री ने मंच से सभी दीक्षार्थियों से अंतिम बार पूछा- अभी भी समय है, फिर विचार कर लो । क्या करना है ? **दीक्षार्थी बोले - नमोस्तु भगवन, वैराग्य जीवन स्वीकार है ।** आचार्य श्री ने कहा कि मात्र कपड़े उतारने से साधु नहीं हुआ जा सकता है । अभी आपका दीक्षा संस्कार नहीं हुआ है आप सिर्फ दिगम्बर हुए । यह स्वच्छंदता का नहीं, कठिन साधना का मार्ग है । श्री एवं स्त्री से हमेशा दूर रहना । यह अरिहंत की वेशभूषा है इसमें कलंक नहीं लगने देना । अपनी आत्मा का उद्धार करने के लिए मुनि दीक्षा लेने जा रहे हो । भोजन नहीं मिले तो समाज को दोष नहीं देना । समारोह के दौरान '**नमोस्तु शासन जयवंत हो**' के नारे गूंजते रहे । आयोजन समिति के आजाद जैन, अशोक खासगीवाला, टीके वैद्य, संजय जैन मैग्नम टॉवर, मनीष मोना, सुधेश जैन ने बताया कि दीक्षा से पहले विशेष प्रक्रिया होती है । बुधवार को सांसारिक शादी की तरह सन्यासी की गोद भराई, मंगल गीत, मेहंदी,उबटन, हल्दी की रस्में हुईं। बारात की तरह बिनौली निकली । गुरुवार को आहार चर्या के साथ बर्तन, पात्रादि का त्याग और केश लोच हुआ ।

3 माह पूर्व मालवा की धर्म नगरी इन्दौर उस समय धन्य हो गई जब श्रमण संस्कृति के उन्नायक आध्यात्मिक संत आचार्यरत्न, चर्या शिरोमणि 108 श्री विशुद्ध सागरजी महाराज ने अपने 21 शिष्यों के साथ नगर के कंचन बाग स्थित समवशरण मंदिर में चातुर्मास का संकल्प लिया । 9 जुलाई रविवार का दिन इन्दौर वासियों के लिए बड़भागी था जब देश भर के विभिन्न शहरों से आए हजारों श्रावकों ने नमोस्तु शासन जयवंत हो के नारे से बास्केट बाल परिसर को गुंजायमान कर कलश स्थापना के साक्षी बने । गुरु पूर्णिमा का पावन दिन और गुरु भक्तों का अपने गुरु के प्रति समर्पण जिन धर्म की प्रभावना को उत्कृष्ट स्वरुप प्रदान कर रहा था । ध्वजारोहण से प्रारंभ हुए अनेक कार्यक्रमों का आनंद उपस्थित श्रावकों ने पूर्ण मनोयोग से लिया । कलश स्थापना पश्चात ज्ञान की सरिता का बांध इन्दौर वासियों को मिल गया जिसमें श्रावक निरंतर डुबकी लगाकर अनवरत अपने कर्मो की निर्जरा कर रहे है । पूज्य गुरुवर की विशुद्ध अध्यात्मिक वाणी की दिव्य देशना का रसपान समवशरण जिनालय परिसर में हजारों भक्त कर रहे है तत्पश्चात् आहारचर्या के समय सैकड़ों श्रावकगण हे स्वामी नमोस्तु नमोस्तु अत्रो-अत्रो तिष्ठो तिष्ठो का उच्चारण करते हुए यही भावना भाते है कि आज मेरे चौके में मुनिराजों के आहार हो जाए । दोपहर आध्यात्मिक प्रवचन, शाम को गुरु भक्ति, आरती व रात्रि में पं. श्री रतनलालजी शास्त्री के माध्यम से श्रावकों का संपूर्ण दिन धर्ममय होता है । आचार्यश्री का हृदय हिमालय की तरह उन्नत व विशाल है । आपके हृदय में विराजित वात्सल्य व करुणा आपकी आध्यात्मिक प्रवचन शैली प्रत्येक श्रावक को उतरोत्तर ऊंचा उठने के लिये प्रेरित करती है व आपके स्नेहिल सानिध्य में परम शांति का अनुभव कराती है, यही कारण है कि किसी भी उम्र का श्रावक हमेशा आपको अपने निकट पाता है । पर्वाधिराज पर्यूषण पर्व के अवसर पर श्रावक संस्कार शिविर में श्रावकों ने अपने जीवन की उत्कृष्ट चर्या का पालन कर धर्म आराधना कर नर से नारायण बनने के अपने मार्ग को प्रशस्त किया । ज्ञान की गंगा एक ही जगह प्रवाहित न हो इसलिए पयूर्षण पर्व के समापन पश्चात नगर की विभिन्न कॉलोनियों से आए श्रावकों की प्रार्थना पर आचार्यश्री ससंघ नगर के मंदिरों में प्रवास कर सभी को धर्म की सरिता में डुबकी लगाने का अवसर प्रदान कर रहे है । इसी तारतम्य में न्यू देवास रोड स्थित न्यास भवन पर गोलालारीय समाज का क्षमावाणी कार्यक्रम सम्पन्न हुआ । आचार्य श्री 108 विशुद्ध सागरजी महाराज के सुयोग्य शिष्य 108 श्री आस्तिक्य सागर जी एवं श्री प्रणीत सागर जी जो कि ग्रहस्थ जीवन में गोलालारीय समाज के है उनके पावन सानिध्य में संपन्न हुआ । मुनिद्वय ने अपनी मंगलमयी

शेष पृष्ठ 6 पर...

श्रमण मुनिश्री 108 आस्तिक्य सागरजी महाराज

पूर्व नाम - बा. ब्र. श्री केतन जैन * पिताजी - श्री वीरेन्द्र कुमार जैन * माताजी - श्रीमती स्नेहलता जैन * जन्म दिनांक व स्थान - 06.03.1984, इन्दौर* लौकिक शिक्षा - बी. फार्मा * मुनि दीक्षा - 8.11.2011 * दीक्षा स्थल - मंगलगिरी (सागर) * आपने गहन आगम का अध्ययन कर करीब 5000 गाथा, सूत्र, श्लोक स्मरण में है । प्रवर्तक पद पर आरूढ़ रहकर पूरे संघ की शयनादि व्यवस्था देखते है । वर्तमान में संघस्थ रहकर दीक्षा पश्चात 15000 कि.मी. से अधिक विहार कर चुके है । आप मौन प्रिय है व आपके जुड़वा भ्राता भी मुनि है ।

समाज गौरव मुनिद्वय 108 श्री आस्तिक्य सागरजी व श्री प्रणीत सागरजी महाराज

श्रमण मुनिश्री 108 प्रणीतसागरजी महाराज

पूर्व नाम - बा. ब्र. श्री चेतन जैन * पिताजी - श्री वीरेन्द्र कुमार जैन * माताजी - श्रीमती स्नेहलता जैन * जन्म दिनांक व स्थान - 06.03.1984, इन्दौर * लौकिक शिक्षा - बी.कॉम, एम.बी.ए. * मुनि दीक्षा - 6.10.2013 * दीक्षा स्थल - नागपुर * आपने गत 3 वर्षों में समयसार (समय देशना) आदि 27 ग्रंथों का अंग्रेजी में अनुवाद किया है । ग्रंथ सृजन व शास्त्रों को अंग्रेजी में अनुवाद में आपकी विशेष रुचि है । गत 2 वर्षों से चातुर्मास में लगातार 11 निर्जल उपवास आपने किये है । दीक्षा पश्चात 12000 कि.मी. से अधिक विहार किया है ।

क्षमा भाव सहित - हमारा प्रयास रहता है कि पत्रिका में श्रीजी व आचार्य श्री के चित्र प्रकाशित न होवे परन्तु इन्दौर में दीक्षा समारोह होने व समाज रत्न मुनिश्रीद्वय का आशीर्वाद मिलने के मोह वश हमनें चित्र प्रकाशित किये है ।

गोलालारीय दर्शन समाज के 4500 परिवारों तक नियमित भेजा जा रहा है । संभव है डाक व्यवस्था या आपका पता सही न होने के कारण पत्रिका आपको व आपके रिश्तेदारों तक पत्रिका नहीं पहुंचती है तो उनका नाम व पता पोस्टकार्ड पर लिखकर पत्रिका कार्यालय पर भेज देवें या 9424013136 पर दोप. 4 से रात्रि 10 तक संपर्क कर सकते है या अपने पता का एसएमएस कर सकते है ।